

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

शलेकभाउरवा
भासया, सुवराज
तस्यजामाना

नचपुत्रपुक्राने
तस्यपुत्ररुद्रराज
तस्यपुत्रवृक्षराज
विष्णुराज

२१

११८

राजोपाध्यायविवाह
पक्षीरा गोत्रोच्चारण
समजयाविधि

ASHA ARCHIVES

3466

A complex, colorful geometric diagram, likely a Sri Yantra, featuring a central circle with a red dot, surrounded by concentric triangles and squares, all enclosed within a larger square frame with four T-shaped gates. The diagram is rendered in red, black, and yellow on a light background.

[illegible]

मसहिविष्णुमि॥३॥ ॐ
 यासां हवति न नवाक्र
 ष्महिविष्णुनि वृक्षवेः
 यलाऽन्धवृक्षे वेनम
 नदहिविष्णुनि यद्वक
 ल्यां रुहामिद्या अमृगनै
 वेनममदहिविष्णुनि॥
 अथसामगुपतिशृणुं न
 सामरुपुनवेनममदहिवि
 षिंचत्यथसाग्राकवे॥
 सामसाग्राकनेवेनममदहिवि
 षिंचित्यथसाग्राकवेसाग्राक
 नरुसाग्राकहवति सर्व
 धाम्नात्रयवेदानां न
 सायत्सामसर्वनेवेनम
 नद्वेदानां नसनाहिः
 विष्णुनि॥ वन्दन॥ ॐ य
 दयक॥६॥ ॐ किं कुरु

४ का देवता यत्नना कना
 वृन्दजा देवतानतिसेषा
 मविदेवमन्मया देवता
 देवान्नगमात्मानं स
 ह्मनागिना ह्यायात्ता
 क्ताया अग्रीनमु॥
 सिन्दु॥ ॐ त्वं जविष्टदा
 ॥३॥ ॐ त्वं जविष्टदा गुप
 ण्ति यजमाना वेग्यान्
 ४ याह्निमन्वावेनन
 ४ ४ धूधामिन्नन्ति ४
 धूनन्मां मुनिमिह
 नदकाताकमूनत्माने
 मिथजावेताकनद
 यजीवात्मानं ॥ श्री
 गोविन्द॥ ॐ अगवस्तुम
 नादधमस्तुमस्तुमनाः
 वयं यत्तमस्तुमस्तुम

माविनाजानामकामधू
 दान्रकीयमाना ॥ ॥
 ॥ उं मगवहं कनवा क
 तामतावधं निसृत्य
 वधं नृत्य नृत्य कलक
 मतावधं नृत्य हा नाया
 धिवा नृत्य काम नृत्य वा
 नृत्य हा नाया धिनि कनि
 द्य नृत्य मामधू नृत्य नृत्य
 तिनदना द्य नृत्य नृत्य
 मधू नृत्य नृत्य कनूत विना
 जानामत्य नृत्य दवा जना
 नृत्य कामानामरि नृत्य द
 यनयथयथेना जना
 दावकनना जना नृत्य या
 वरुकाथलार्क पृथग
 वयना यल्लु नहिन
 ताम्भानिममिहयस्मा

विनाजानामाकू वतता
 ननानत्य यावरु नृत्य
 सादगद (ग) ककाठ प
 मायलार्क पृथगारिम
 नृत्य नृत्य नदना विनाज
 कनूत नदना नहिवि
 नाद कामधू दान्रकीय
 माधम नृत्य नदना काम
 मधू दान्रकीय माधम
 कनूत ॥ ॥ उं नृत्य द
 विनिति ॥ ॥ उं स ह दय
 नी द ह विषजननीम
 नृस्ति निषजन न
 हियदियया यदि सामा
 दगवीनमिति याधमवे
 दगवीना यधमनीवाल
 नृत्य सर्वगमिथम
 निवे सर्वगधम नृत्य

क्रामि॥मनु॥ॐ न्रायस्तु
श्रुत्वा हि ४ सर्वात्मकामान
वाप्नुयात् ॥३॥ॐ नृश
४ स्त्राहत्याथावे सर्वविद
वानामायननकस्तत्रोहि
रवेन ददवता हि रिमयः
नियत्किं व विवर्धयस्तु
स्तु ॥ नस्तुह मोनिक्षय
यतिमनु ॥ ॐ समुद्रं व ४
प्रहिरक्षमिस्त्वा यानिमः
रिगच्छता नृनि स्त्रास्माकं
वानामायना वामासति
मय्यय ४ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ॐ समु
द्रायत्वा वातायस्तु हस्त
यन्वे समुद्राय यवतत्र
नस्तु दसमुद्रा सर्वदवा
४ सर्वा निरुतानि समुद्र
वनि नस्तु प्रवेन रुहा

नितस्तादाह समुद्रायः
त्वावातायस्तु हा ॥ ॥ ॥
गुनाजामातु ४ यादो वः
सुधसमाकु यत ॥ ॥ जा
मातु न्रावमन दे द्या नृव
गुन ४ ॥ ॥ जामाता यो ॥
न ॥ ॐ न्रावमनीयं वनिष्ट
क्रामि॥मनु॥ॐ न्रामाग
मस्तु सास ० स नृववसा
नमाकू नृयिर्यय जाना
मधियनिय नृनामनिष्ट
नतनूनी ॥ ३ ॥ ३ ॥ ॐ नृ
धस्तुमातिष्ठ न्रागमस्तु
नृयवयस्तु स्यामवेनः
दानिष्ठ न्रागमस्तु ना नृः
स्तु १ नृय ० सदी ४ समुद्र
यति ॥ ॥ ननाजामाता
यस्तु ननीकाय ॥ ॥ ॥

सुनामधूयर्कं गृहीत्वा य
१० ग॥ ॥ जामाता य १० ग॥
॥ ॐ मधूयर्कं यति गृह्णामि ॥
मि ॥ ॥ मधूयर्कं समुद्रि
का यति ॥ ॐ मित्रस्य वा
वक्षुषा समिद्धं ॥ ३ ॥ ६ ॥
ॐ सुवदाय ग्यादिति ना
यति नादिगमि वासि दव
स्य सविहृ नाधियस्य ३ ॐ
मिदवमवा स्ये सविता न
मधियर्कं कनामि नाक्ष
६ ॥ ० नक्षसामयहस्ये व
क्षुर्मादा ॐ मित्रक्षु नवा
स्य धरुत ॥ ॥ ६ ॥ वक्षु वा
नृवति ॥ ॥ ३ ॥ नना यद
यता ॥ ॐ दवस्य वति ॥
६ ॥ ॐ नामा धरु ॥ माद
ददिह्ये नास्त्रा गीत्यसा ३

ववर्वधू ॥ यति गृह्णामि
॥ ॥ वामहस्तं मधूयर्कं
निष्पद्य दक्षिणा नामि
कयार्तं मधूयर्कं माता
यहू मोनिद्वि यत ॥ म
नु ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ग्यावा
स्यायान्नमनेयहृत्रा ३
विद्वत्तहृनि कृ नामि ॥
पिवार्त ॥ ३ ॥ ॐ यथा ३
स्तानं कत्यनी ॥ ॐ ॥
नामिका हुष्टाया मा
दाया मादायान्न नक्ष
सुनीवा कृवो वानिहृः
स्तान ॥ ॥ यामा मिमनु ॥
ॐ ये मधूनामधर्वी यन
म ० नूयमयमाग्नादीन
नार्हमधूनामधर्वी नः
यनमधनूयधमाग्नाद्य

नयनमामधया नानादाः
 सानि॥३॥६॥ॐ नृप
 विज्ञानाधूनाति।मधूमा
 धिनिनि४या॥धमवेमधू
 याधमवास्मिन्ननदध
 निशीधिरुवनिनुयावेः
 याधम४याधउदानाया
 नस्मान्नवास्मिन्ननदध
 नि॥ ॥मधूक॥धमम
 सञ्जनद॥धनयत्॥ह
 धीमावम॥३॥जामा
 नासयन्नृगस्य॥धन
 ॥ॐ वाद्यन्नास्यमुमरे
 ॥ॐ नासामवा॥धममु
 धा॥ध॥ॐ नृक्षामच
 दूनमु॥वृक्ष॥ॐ कः
 धुयाम॥धमममु॥कः
 ॥धु॥ॐ वाक्षामवसः

ममु॥वा॥ॐ उर्वोर्मडा
 जासु॥६॥ॐ नृनिष्टा
 निमज्जानिननूस्त्वाम
 सहसनु॥६॥ॐ सयथा
 सदासामय०समूडम
 कायनमव०सर्वसा०
 स्यग्भना॥त्व०कायमव
 नमव०सर्वसा०गन्धना
 नासिक०कायनमव
 ०नसाना०कि०कायन
 मव०सर्वसा०नृवाध
 वदून०कायधमव०
 सर्वसा०गन्धना०
 धमकायनमव०सर्व
 सा०संकस्यानामान
 नकायनमव०सर्वसा
 वेदाना०हृदयमका
 यन०सर्वसा०कर्मना

न

नृवाचं चिकि दुष ऊना
 यमाग्नमनाग्नमदिनि
 न्वनिष्टममवामूष्यव
 वाय्मन ० हनामियद्या
 तरुनाथयद्यत्सिष्टकं
 ममचामूष्यव ॥ ६ ॥ ॐ
 स्वाहानूदायनूदद्रुग
 यन्त्यद्रुद्येवदक्षि
 क्रमान ४ यतिवस्त्राज
 ययकृनिन ० सुउरुन
 न ४ ग्ननायाउद ४ निः
 नसाथ्यवाऊनसादव
 स्यादियामवेनमनदि
 निधीधमथयत्वधक
 ननन्मानूदाहिनसदि
 नि ॥ ॥ श्रमूकग्मयस्या
 मूकगर्म ४ वाय्मह
 न ४ ॥ ॐ उरुउरु

निति ४

होयं वरुहस्य नयत्वा मः
 श्रुं वनू (धम) ददातु साम
 नत्व मणी मत्व ग्यायं न
 धिम आम श्रुं यमि ग्रही
 नु यमायत्वा मः श्रुं वनू
 (धम) ददातु साम नत्व म
 मीय ह या याय न धिव
 याम श्रुं म्यमि ग्रही नु
 ॥ २ ॥ ॐ सहि न ध्वा वरु
 ह्यग्न यत्वा मः श्रुं वनू
 ददाति ह्यग्न यः श्रुं न
 वनू (धम) ददात्ता म नत्व
 मणी या य द्वा न धिम
 याम श्रुं यमि ग्रही नु
 ह्यधर्मा वरुहमि नू दाय
 त्वा मः श्रुं वनू (धम) ददाः
 त्विमि नू दाय श्रुं न वनू
 (धम) ददात्ता म नत्व मणी

श्री गणेशाय नमः

ASHA ARCHIVES

3466

श्री ११४१

यथा धामदाय प्रविमः
 यामर्क यमि ग्रहीणं
 यथवा सुप्रयति वृह
 स्यन अत्वा मर्क वनू
 ददाति विवृह स्यन य
 द्धन द्वनू धम ददात्ता
 मृनत्वमणी यत्वे ग्दा
 यप्रविम यामर्क यमि
 ग्रहीणं सुप्रयति वृह
 यमि यमायत्वा मर्क
 वनू धम ददाति यि
 मायर्क वनू धम ददा
 त्ता मृनत्वमणी यह
 यादाय प्रविम यामर्क
 यमि ग्रहीणं सुप्रयति
 ॥ ॥ ॐ कादा कस्मात्
 दातु कामादा कामाया
 दातु कामादा कामा

यमि ग्रहीणं कामं गुरु ॥
 ॥ ॐ नृथ यद नृददा
 ति दम्भय मृगसदिनिग
 लुयति कादा कस्मात्
 दा कामादा कामायादा
 कामादा कामा ४ यमि
 ग्रहीणं कामं गुरु ॐ ति
 नृदवनाया नृदिनिग
 ति नृदा कर्नृदवनाया
 नृदिदि ॐ दिव वेयाः
 नृदवना १ समि ॐ साः
 दीव्यमाना ४ ४ ४
 ॐ सां रुवनी दवेयमि
 नृग्न वली दधमि सा
 दीव्यमाना नृव ४ ४
 ४ ॐ सां रुवनि ४ ॐ
 हवे ॐ सां रुवमि यन
 वविद्या युनि ग्दा नि

कामं नृददाती ३

नद्यथासमिधश्चरुया
न्दवमनोऽरुहानियाम
धीयन्तददानिगस्माद
धीयन्तददानिगस्माद
धीयन्नानिदिभननि
॥ ॥ ॐ कार्मकामधेध
धृक्कमिणायवन्धय
वा ॥ ॐ द्यायाग्निस्यीधू
धृक्कयजात्यडाधधी
॥ ॥ ॐ नृथधृक्कय
नृदक्षिधकार्मकामः
धृक्कधृक्कमिणायवन्
धयव ॥ ॐ द्यायाग्निस्यी
धृक्कयजात्यडाधधी
त्य ॥ ॐ निसर्वस्यादवत्या
वेकमिनगात्यादवगा
त्य ॥ ॐ सर्विकामाधृक्क
ति ॥ ॥ मनु ॥ ॐ नृथ

निष्मनावृषशनहीमा
द्यनाद्यनःकोरुधवः
वधोनाम ॥ ॐ कन्दनोः
निमिषत्रकवीनः ॥ ॐ न
ॐ सनात्रकयत्साकमि
द्य ॥ ॐ ॥ ॐ नृथ ॥ ॐ
निष्मनावृषशनहीम ॥ ॐ
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
हवन्ति द्यादधमासा ॥
सम्बत्सुनसम्बत्सुनाग्नि
यावानग्नियावत्यस्य
मायातावनेवेनदक्षि
धनोमुनः ॥ ॥ मनु ॥
ॐ धृक्कवासिधृक्कवार्ययः
ऊमानास्मिन्नायनन
यजायायधृक्कय
न ॥ ॐ ननद्यावाद्यधि
वोयथमिन्द्रस्य

विदि नसुविश्वजनस्य
क्याया ॥ ६ ॥ ॐ नृत्वे
नमरियद्यवाजयति
ध्रुवा सिधुवायं यज
माना रस्मिन्नायतन
यजयायगुरिरुया
दिनियगुरिदिगिवे
यं कामं कामयतसा
सो कामः समुद्रात् ॥
॥ ॥ ~~कामं समुद्रात्~~ कः
न्याजयेत् ॥ ॥ कवले
जामाना नवय १० ॥
कन्या जामातुर्दक्षिणे
या ॥ न्यनियत् ॥ ॥ नृत्वे
नृत्वे वधुर्दक्षिणे दद
ता ॥ ॥ जामाता नृत्वे नृत्वे
हि दक्षिणे ददता ॥ कन्या
दानसंयुक्तं नृत्वे

वकसुमद्रुमसु ॥ ॐ
दवसत्वा ॥ ६ ॥ ॐ स न
सत्वे ॥ मनु ॥ ॐ नृत्वे
नारुमज्जा ॥ ६ ॥ ॐ याता
मंरुवा ॥ ॥ मनु ॥ ॐ ऊ
दद्यकवविश ॥ ६ ॥ ॐ
किं चंदका ॥ मनु ॥ ॐ
लं ऊ विष्टदा ॥ ६ ॥ ॐ लं
ऊ विष्टदा नृत्वे नृत्वे ॥
॥ ॥ नृत्वे नृत्वे ॥ ॐ क
न्या नृत्वे वधुर्दक्षिणे म न वार
उ ॥ नृत्वे नृत्वे नृत्वे नृत्वे
वाकमीमि यत्तु सा मा
सूयतयत्तु यत्तु नृत्वे
धनार नृत्वे नृत्वे व न
॥ ॥ ६ ॥ ॐ कन्या नृत्वे व
वद्विष्टदा वाकन्या नृत्वे
जिष्ठ नृत्वे नृत्वे मा वा नृत्वे

वाकणीमिमानावात्रा
 त्मात्रुहिकाकणीमि।य
 यःसामःसूयनसामाः
 वेनाजादवानामनैय
 ह्वावेसामायरुनेवेन
 मद्युगस्यधनात्रुहिका
 कणीयवेनदाह॥१॥
 वाकन्याव्ववहनुना
 वनवेरुव्वमात्रुयित्र
 क्षुनात्रुहिकाकणीमि
 यःसामःसूयनयययः
 द्युगस्यधनात्रुहिका
 वन्त॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥
 ममधनिष्ठमुमिनिष्ठः
 नुतिनूगवात्राजिनः
 त्मानुडादविधमनिः
 धनव्वमनयनदवना
 नामधूमनीमधूम●

४१

वन्त॥मन्त॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥
 सुडावधमनिनायस
 चत्वारवनाम्यह॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥
 त्वदीद्यायूरुत्वाभनव
 विनाहगान॥॥३॥
 व्वदहहवि॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥
 रुदयनीद॥॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥
 क्रधव्वजीकय्यानाम
 होयकी॥॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥
 धःसादिधम्रीसूया
 याद्यनिमः॥॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥
 वन्दनगम्ययूयव्वः
 गरुतादिकेयनस्यन
 दद्यानी॥॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥
 यजामातायुगरुत
 कर्तुनीवधमनिनद
 वेगवमुदत्वा॥॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥
 तवयूगीयिआमकीद

वीवधूः कृतं ह्यादि ॥ ॥
य १०५ ॥ ॥ तन्नानि कु
मधी ॥ जामाना कन्या या
ह सं धे ला य १०५ मनु
॥ ॐ यदधि मनसो हन
दि ॥ न्न नृ यवमाना वा ॥
हिन धा व धु वे व धु ४
सत्ता व न्न न सा क नो मि
॥ ॥ न्न म क द वानि कु
मधी ॥ ॥ कन्या व न्न स
वाम हा ॥ ग ह्ना न व्या ॥
त न्ना जामा क न्या द न्
य न ॥ मनु ॥ ॐ नृ धान
व कु न य नि धु नि मि वा
य शु स्य ४ सु म ना ४ सु व
ची वी न सु द व कामा ४
स्या ना ग न्ना ह व द्वि य द
गं च रु ध्य द ॥ ॐ साम ४

यथमा वि वि द ग न्न वी वि
वि द उ ह न ह ती या र नि
क्ष वि व नि मु नी य स म
नू य जामा ॥ ॐ सामा द द
न न्न वी य ग न्न क्षा द द द
ग्न य न यि क्षू य ना क्षू
या द नि म क म ॥ ॐ
मी ॥ सा न ४ य मा मि व न
मा म यि न य त्मान ड न्न
उ धा नि वि ह न ४ य स्या
मृ ग न्न ४ य ह ना मृ ॥ ग
य स्या मृ ग न्न ४ य ह
ना मृ ॥ ग य स्या मृ का
मा व ह वानि वि क्षे ॥ ॥
ॐ नि स म ४ य वि धि ४
॥ क्षी य न्न व ह य रु धि
नि न व व क ॥ ग न्न व द
कान का र वा य क ॥

वनयक ~~वा~~ न्यादानय
 द्रुगिः समाया ॥ ॥ न
 यातिर्क दं गजसकिना
 (ग) मासतयस्य भिगिय
 दं कं वा दृग्भति (ये) सु
 नदिनं ३ रिखच वेवा
 हिर्क यूसु मिदं वं नार्थ
 ॥ ग्राह्याधनविषय
 कर्माचार्य मनी रथ
 ॥ ॥

ॐ ॐ द ॐ ह वि १ प जन न
 मे १ सु सु द १ वी न ॐ सर्व
 ग १ ॐ ह सु य । ग्राह्य
 नि १ ॐ ह सु नि ला क स न्य र
 य स नि । ग्राहि १ प्रजा व दू
 ला मे क यो त्व न्न म्य यो न
 ता १ ग्राह्या सु ध रु ॥ ॥
 प्रजासनि ४

ॐ श्री गुरु नमः ॥ ३ ॥
 ॐ गा वा नृ गा य ॐ देवता
 वन न काम य ना य ज
 नृ गा ॥ जला ~~स~~ श्रु य
 ज न दे वा स श्रा य का
 म स मा धन य ला मा
 ह वा व न न ज १ न य ज
 न स मा लो काम १ स म
 धन श्री गुरु नमः ॥ ॥ ॐ
 गा ज न म ध नार्थ ॥ ॐ
 ग्राह्या नृ गा ना नृ १ ह ना
 रु हा नि ना ज ना वे ना
 १ १ रु न १ १ रु हा ह द व
 ना व न न ग्रा ध न य न व
 (ग) दू ला ना रु व ती श
 मा ॐ श्रा यी न १ य व
 म न्ना न श रि न धू म

४ यथासाक्षात् जाना
नादमनूमना नाना
आरुवती ॥ ॥ ॐ धाम
कुदन्निनिदिता ॥ ॐ नवे
दवा ४ सुन्वाविद्रुजदन
० सर्वस्वा कृत्स्नवास
वृजदहिवा नचयन्वा
स्त्वा यय ४ सुप्रतामन
४ मयस्मन ॥ ॥ ॐ ॥
१ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॐ ॥
२ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

ॐ नमः

ॐ नमः

ॐ नमः
॥ नमः ॥

१ नमः श्री गुरुभ्यो
य ॥ ॥ ॐ श्री गुरुभ्यो ॥ ॥
शान्ता जगत्पति शान्ता
जाति वसवाहस्य ये
प्रियवत्तमाश्चान्दिनीय
गमस्वावाजसैनयचन
धम्य श्रीमन्मयात्तमणि
मधुला रुव श्री ३ यशुय
नि ॥ ॥ ॐ ॥ नमः
विन्दवन्दनश्चानरुः
कि प्रमात्रिगान् ४ क
नधस्य श्रीमदयूक्त
समस्तैर्गयनमरुद्धान
कमलनाजाधिनाज
वृन्नाहिनस्य गुरुवः
साकनसमस्तैर्गय
याविनाजमानस्य श्री
३ गनूतना नायधय

कदयङ्कजसमानाधने
कतानविरुस्य श्री ३ ग
कनना नाय धचवधः
कमलधूलिधूगवितः
गिनानूहस्य श्री ३ मरु
ग्वनीष्टदवतायावन
सविप्रसादिगानन्द हृद
यस्य श्री मरु नूरास्कः
नहिमकनकिनेधसम
सुयनिमधुतयविद्या
कदगदिक्कुरवनलि
ग श्री ३ मकयनीष्टद
वतायदयैजागिनस्य
श्री ३ स्त्रिष्टदवतायाग्व
नधकमलसीसवनग
त्यनस्य पूर्वोद्यागमद्रा
याश्चलिकसन्धिविग
हनीनिद्वयाचार्यस्य

नित्यमक्षयनधनवर्द
यद्वर्दयदकमसः
हिताया ० या नंगनस्य
यैजागिनयङ्कस्कायक
ग ४ सुतिवूनाधषट्
ग्वमुनिवूनाचार्यः
स्यसकाङ्कनिकाद्याः
कृतिर्यङ्कायस्यत्र
मूकनाजानाधगम
ध ४ प्रयोगाय वूनथा
जाय वूनः प्रयायत्र
मूकगर्मधकन्याः
चिन्त ॥ ॥

ग्रीग्रीसुगुगुचनध॥॥
मानवगुगुसमानव
यूननवससीकस्यनिः
प्रियव नमाध्वनिन्यः
नगनेकगुगुवाग्नित
स्यग्रीमनेयातमधुः
लीहवस्यग्रीमकुग्री
इयगुयतिचनधकम
तध्वसिध्वगनिगनिना
नूहस्यग्रीमकुग्रीग
नूउ नानायध्वनध्वध
सादिगानकसंयद४
ग्रीमकुग्रीग्रीमानेग
नीध्वदवतावनसुध
यसादददीयमानान
नमहाकायस्यगुधग
ग्रामाहिनामस्यसंग्र
मविजयग्रीविनाजः

मानस्यग्रीमकुनिजुध
दवतायसादासादिव
यस्यधिरुयातमधुत
स्यविविधविनूदावली
विनाजमानविसतगन
नविकृतनितकस्यान
कह्यातमैलिमधिम
नीचिमैरुमैजनीमधु
नयादस्यनिविस्तना
जनीनिमहाधुवावग
हनेचहुनस्यनूमकुद
ववर्मध४ययोयाययो
याययूयायकन्याधि
न॥ ॥

कुश्यादित्यदुहितानपसाभा
विताजघवरा, वल्कलाजिनसं
छन्नासये सौपे, कुमारीवकुनि
वर्षसरुसानि, तपसातेजसातप
तीतिविख्याता ॥ तौ ह्यनुरासधै
क्यमो नृप सुनुर्ममवाक्य ॥ ब्राह्मणी
वत्सरोभवा, एषानदादिकदा
रिकदारिका, अविधवा असु
पुत्राजीवत्सानुत्तरवादीपिय
वादीपिषणका, रीसत्तवादी
॥ ब्राह्मणसंवदेवत, मातरत्य
जतिपितरं न जति, भेत्तरिंवा
हितं वपूजितं अस्ते पूजितं अ
॥ यद्येन्युस्येन्द्राणी यथा दशर
थस्य कौशल्या यथारामस्य शी
ता यथारवनेस्य मनोदरीय
थावालेभ्य तारा यथा वायोर
अना यथानरस्य दमयन्ती
यथा सौदासस्य मदयन्ती य
था पुरुरवस्य उर्वशी यथा पु
रुषस्य वनममदा यथा शान्ते
नाश्वगंगा यथा धृतरास्त्रस्य
श्रीधारी ॥ यथा पाण्डवस्य कुन्ती
यथा पाण्डवानां वदोपती यथा
अर्जुनस्य भूमदा यथा भीम
स्य नस्य देवमा, यथा दुर्जोष

नस्य भानुमती यथा दित्यस्य
छाया यथा वन्द्यस्य रोहिणी
यथा गणपतिश्च बुद्धिमती य
था तेजो नुस्यार्था यथा अगस्त्य
स्य लोपासुदा यथा योगेश्वर
स्य मयित्रयी यथा ब्रह्मणसा
वित्री यथा विष्णोरुक्मिनी
यथा उमापश्यते एवं तृभ्य
मिमंगदेव स तु वशो दारा
सुप्रीता सुप्रीता भवतु ॥ अथ
तोमंगलानि माहेन्द्रवारुणा
सोभवानि सुशोभवाणी ॥ ॥

